



कमला नेहरू महिला महाविद्यालय ; भुवनेश्वर
हिंदी विभाग ; ई - पत्रिका

हिंदी भारती

अप्रैल - मई - 2019

संपादक मंडली

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी
डॉ. मनोरमा मिश्रा

उप – संपादक : कु. सोनाली राउत
कु. सरिमता महंती
कु. श्रावणी महंती



संपादकीय

‘हिंदी भारती’ की ओर से भीषण चक्रवाती तूफान ‘फनी’ की चपेट में दिवंगत सभी आत्माओं को भावभीनी श्रद्धांजली।

विगत दिनों ओड़ीशा ने भीषण चक्रवाती तूफान ‘फनी’ की करालता को झेला है। महाप्रभु जगन्नाथ जी के आशिर्वाद से सुख संपन्न उत्कल भूमि ने मई 2 से 4 तक प्रकृति की विभीषिका से संघर्ष किया तथा उस भयंकर विध्वंस के बाद अब हिम्मत जुटा कर धीरे धीरे खड़े होने की कोशिश कर रही है। अतः ‘हिंदी भारती’ का अप्रैल एवं मई का अंक समवेत रूप से आपके समक्ष प्रस्तुत है। हमारी ई - पत्रिका अब एक बहुत बड़े परिवर्तन के दौर से गुजरने वाली है। जिन छात्राओं को ले कर यह पत्रिका शुरू हुई थी, अब वे छात्रायें महाविद्यालय की शिक्षा समाप्त कर जीवन के बड़े लक्ष्य की ओर जाने की राह पकड़ चुकी हैं। थोड़े ही दिनों में नई छात्रायें आयेंगी, जो छात्रायें विभाग में हैं, वे नूतन परिवेश एवं नवीन पाठ्यक्रम के साथ सामंजस्य बिठाने की कोशिश में प्रयत्नशील रहेंगी। ऐसे में हो सकता है कि ‘हिंदी भारती’ के स्वरूप में भी परिवर्तन आये। आशा है आप हमारा साथ हर हाल में देते रहेंगे और अपनी बात हम तक पहुँचाते रहेंगे। “आपकी बात” हमारे लिये अखण्ड प्रेरणा का स्रोत है। कृपया अपनी बात हम तक पहुँचाते रहें। हम आशा करते हैं कि हर अंक की तरह आप इस अंक को भी स्वीकार करते हुए भविष्य में हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे और आपका आदर और स्नेह हमें इसी तरह मिलता रहेगा। अब हमारी पत्रिका को आप हमारे महाविद्यालय के वेब साइट www.knwcbsr.com पर भी पढ़ सकते हैं।

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

अनुक्रमणिका

क्र सं.	शीर्षक	विधा	नाम	पृ.स .
1.	फनी का कहर	लेख	संग्रहित	5
2.	पंडित अटल बिहारी वाजपेयी - राष्ट्र के प्रति अगाध प्रेम	लेख	लिज़ा मिश्र	9
3.	दोराहा	कहानी	पिंकी सिंह	11
4.	सोचती हूँ तुम होते तो क्या होता ?	कविता	पिंकी सिंह	13
5.	खेल जो कहीं खो गये	लेख	सोनाली राउत	14
6.	सुबह	कविता	हाफिज़ा बेगम	16
7.	गर्मी के दिन	कविता	शरीफा शरवारी	16
8.	मैत्रेयी पुष्पा	परिचय	संग्रहित	17
9.	मैं कुत्ता ही भला	कहानी	सोनिया नायक	18
10.	भगवान दास मोरवाल	परिचय	संग्रहित	20
11.	आपकी बात			21
12.	अटल बिहारी वाजपेयी	यू ट्यूब लिंक		23
13.	यादों के गलियारों से	चित्र स्मृतियाँ	यादों के गलियारों से	24





फनी से पहले...

चक्रवाती तूफान फनी के पूर्वी तट की ओर मुड़ने के कारण ओड़िशा में 11 लाख लोगों को तटीय इलाकों से निकाला गया। यह देश का अब तक सबसे बड़ा आपदा पूर्व अभियान है। चक्रवात ने ओड़िशा के पुरी में दस्तक दी। विशेष राहत आयुक्त (एस आर सी) के मुताबिक, तटीय इलाकों से निकालकर लोगों को 880 चक्रवात केंद्रों, स्कूल-कॉलेज की इमारतों और अन्य ठिकानों जैसे सुरक्षित स्थानों पर ले जाया गया। ओड़िशा के 14 जिले-पुरी, जगतसिंहपुर, केंद्रपाड़ा, बालासोर, भद्रक, गंजम, खुर्दा, जाजपुर, नयागढ़, कटक, गजपति, मयूरभंज, ढेंकानाल और क्यॉंझर के चक्रवात की चपेट में आये। वहीं आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में चक्रवात का प्रभाव पड़ा।

3 मई की शाम हवा की रफ्तार 170-180 किलोमीटर प्रतिघंटे को पार कर गई। इसकी रफ्तार 205 किलोमीटर प्रतिघंटे तक पहुँच गई। मुख्यमंत्री नवीन पटनायक तैयारियों का जायजा लेते हुये कहा कि हर जीवन कीमती है तथा गर्भवती महिलाएं, बच्चे, बुजुर्ग व्यक्ति और शारीरिक रूप से अक्षम लोगों पर विशेष रूप से ध्यान दिया जायेगा। संभावित घटना से निपटने के लिए नौसेना, वायुसेना, सेना और तटरक्षक बल को हाई अलर्ट पर रखा गया। राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ), ओड़िशा आपदा रैपिड एक्शन फोर्स (ओडीआएएएफ) और दमकल जवानों को प्रशासन की मदद के

लिए संवेदनशील क्षेत्रों में भेजा गया। भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) के मुताबिक, ओडिशा में पुरी से करीब 430 किलोमीटर दूर दक्षिण-दक्षिण पश्चिम, पश्चिम मध्य बंगाल की खाड़ी, आंध्र प्रदेश में विशाखापत्तनम से 225 किलोमीटर दक्षिण-दक्षिणपूर्व और पश्चिम बंगाल के दीघा में 650 किलोमीटर दक्षिण-दक्षिण पश्चिम में फनी चक्रवात केंद्रित था। चक्रवात फनी से निपटने के लिए सभी हवाई अड्डा प्राधिकारियों को सावधान रहने को कहा गया। भारतीय हवाई अड्डा प्राधिकरण ने सभी तटीय हवाई अड्डों को सावधान किया गया ताकि सभी एहतियात बरती जाएं। इंडिगो ने चक्रवात फनी के कारण विशाखापत्तनम से आने और जाने वाले विमानों को गुरुवार को रद्द कर दिया। रेल मंत्रालय ने चक्रवात तूफान फनी को देखते हुए नई दिल्ली-भुवनेश्वर राजधानी एक्सप्रेस सहित 223 ट्रेन 4 मई तक के लिए रद्द कर दी। प्रभावित ट्रेनों के टिकट रद्द करने पर यात्रियों को पूरा रिफंड दिया गया। इसके अलावा रेलवे प्रभावित क्षेत्रों में फंसे हुए रेल यात्रियों को गंतव्य तक पहुंचाने के लिए तीन विशेष ट्रेन चलाई गईं।

फनी के बाद,,,

एक बार जब चक्रवात कमज़ोर पड़ गया, तो NDRF, ODRAF और फायरमैन पेड़ों और अन्य मलबे को सड़कों से साफ करने में लग गये। फनी के पहले तक, पुरी-भुवनेश्वर के मध्य संपर्क बहुत अच्छा था लेकिन फनी के बाद कम से कम चार दिनों के लिए, पुरी, भुवनेश्वर और कटक के मध्य सारे संपर्क टूट गये, क्योंकि चक्रवात ने बिजली के खंभों को गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त कर दिया था। राज्य को बिजली आपूर्ति के क्षेत्र में लगभग 1,200 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। लाखों लोग प्रभावित हुए हैं, और राज्य सरकार ने बड़े पैमाने पर बचाव और पुनरुत्थान अभियान शुरू किया है।

ओडिशा के आठ जिलों में चक्रवाती तूफान फनी के बाद जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया। प्रारंभिक रिपोर्टों के अनुसार दीवारों, पेड़ों और बिजली के खंभों के गिरने से 20 लोगों की मौत हो गई थी। मरने वालों की संख्या की कोई आधिकारिक जानकारी नहीं थी।

राष्ट्रीय और राज्य राजमार्गों के साथ सड़क अवरोधक साफ करने के बाद, ओडिशा आपदा रैपिड एक्शन फोर्स और राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल के कर्मियों ने गांवों में जाना शुरू किया।

क्योंकि संचार नेटवर्क तहस नहस हो चुका है, इसीलिए क्षति की सीमा का पता नहीं लगाया जा सका है। ऊर्जा के बुनियादी ढांचे को बड़े पैमाने पर क्षति हुई है। मोबाइल कनेक्टिविटी की

विफलता ने अराजकता में इजाफा किया है। हालाँकि, विशेष राहत आयुक्त कार्यालय ने कहा कि पहली प्राथमिकता घायल लोगों को अस्पतालों में भर्ती कराना और बिजली बहाल करना था।

3 मई को ओडिशा में चक्रवात फनी के प्रभावित होने के एक सप्ताह बाद भी, भुवनेश्वर शहर और पुरी जिले के बड़े हिस्से बिजली के बिना रहे, यहां तक कि सरकार राहत सामग्री वितरित करने और नुकसान का आकलन करने के लिए संघर्ष चलता रहा।

चालीस लोगों की "अत्यंत गंभीर चक्रवाती तूफान" में अब तक मारे जाने की सूचना है। 9 मई को राज्य द्वारा जारी सूचना के अनुसार, 14 जिलों के 159 ब्लॉकों में 1.5 करोड़ लोग फनी से प्रभावित हुए हैं। राहत कर्मी उन क्षेत्रों में पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं जो अब तक दुर्गम रहे हैं।

भुवनेश्वर में, सिविल सोसाइटी ने 30 से अधिक नागरिक संगठनों के एक समूह ने फनी को जवाब दिया और राहत कार्यों में मदद करने और राज्य के साथ समन्वय बनाये रखने तथा राष्ट्रीय मीडिया को जानकारी देने का प्रशंसनीय कार्य किया है। स्वयंसेवकों के समूह ने भुवनेश्वर और कटक शहरों के अलावा, अब तक नौ प्रभावित ब्लॉकों का दौरा किया है। उन्होंने राज्य सरकार को लिखे एक पत्र में अपनी टिप्पणियों को साझा किया है।

भोजन और पानी

राज्य ने एक स्थिति रिपोर्ट में कहा है कि ओडिशा पुलिस ने पुरी जिले में चार स्थानों पर पकाया भोजन वितरित करना शुरू कर दिया है।

खोरधा जिले में, 152 रसोई हैं जो लगभग 20,000 लोगों की सेवा कर रही हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि मुख्यमंत्री राहत पैकेज में 50 किलोग्राम चावल खोर्धा, भुवनेश्वर और कटक जिलों में वितरित किया गया है।

बिजली

प्रभावित क्षेत्रों का बड़ा हिस्सा बिजली और मोबाइल नेटवर्क के बिना 15 दिनों तक रहा, फनी ने बिजली और फोन टॉवरों को नुकसान पहुंचाने के अलावा, अन्य बुनियादी ढांचे को बड़ा नुकसान पहुंचाया है। राज्य में 9 मई को स्थिति रिपोर्ट में कहा गया है कि 33 किलोवॉट लाइनों में से 1.23 लाख किमी, 11-किलोवॉट लाइनों को भारी नुकसान पहुंचा है।

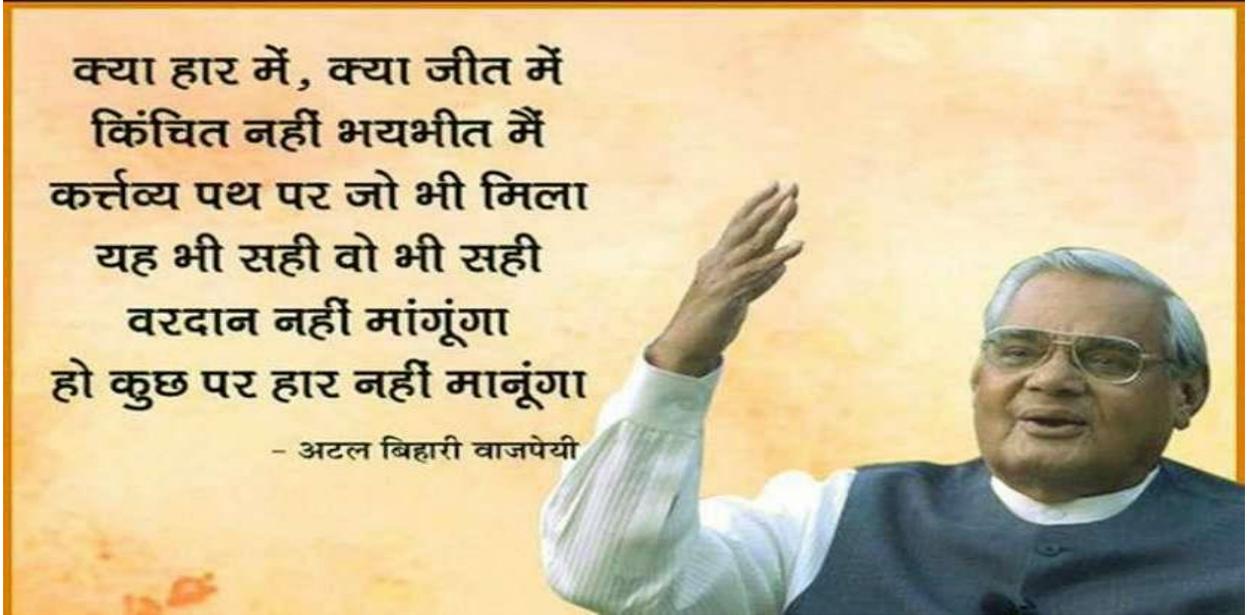
पुरी जिले में सभी टेलीफोन और मोबाइल नेटवर्क धराशायी हैं। खोरधा जिले में टेलीफोन और मोबाइल कनेक्टिविटी भी बुरी तरह प्रभावित हुई है, जिसमें भुवनेश्वर शहर भी शामिल है।

राज्य सरकार ने पुरी और खोरधा जिलों में बिजली और मोबाइल नेटवर्क बहाल करने में केंद्र से मदद मांगी। तीन सौ दस समूह बिजली बहाल करने के लिए काम कर रहे हैं।

"चक्रवात के एक सप्ताह बाद भी राजधानी में अंधेरा है।" "पुरी जिले में रोशनी आने में शायद एक महीना लगे।

ये है फनी का कहर।





पंडित अटल बिहारी वाजपेयी - राष्ट्र के प्रति अगाध प्रेम

अटल जी के रचनाओं में मानव का पथ प्रशस्त करने वाले विचार हैं। उनके लेखन की यह विशेषता है कि उसमें जीवन के इंद्रधनुष के सप्त रंग उभरकर पाठकों को सम्मोहित कर लेता है। अपने संपादन काल में उन्होंने साहित्य, संस्कृति, और राष्ट्रीयता से संबंधित जो लेख हैं उनमें उनका निजी सोच, निजी चिंतन, निजी विचार, और निजी शैली देखने को मिलती है। अपने लेखों में भावुक होकर गद्य को पद्य का जैसे रच देते हैं। राजनीति संबंधी लेखों में वे अकाट्य तर्क प्रस्तुत करते हैं। वे अपने गद्य में एक भी निरर्थक वाक्य नहीं आने देते।

अटल जी के गद्य में राष्ट्रीय भावनाओं का उदात्त स्वरूप पढ़ने को मिलता है। वे राष्ट्र के लिए जीते हैं उनके हृदय की प्रत्येक धड़कन में राष्ट्र प्रेम धड़कता है। वे राष्ट्र की सेवा में जीवन दान दिया है। भारत की मान-मर्यादा को सदैव उच्चतम शिखर पर आसीन करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। वे भारत को जमीन का टुकड़ा मात्र नहीं मानते हैं, वे लिखते हैं- "भारत जमीन का टुकड़ा नहीं, जीता जागता राष्ट्रपुरुष है। हिमाचल इसका मस्तक है। गौरीशंकर शिखा है। कश्मीर किरीट है। पंजाब और बंगाल दो विशाल कंधे हैं। विंध्याचल कटि है, नर्मदा करधनी है। पूर्वी और पश्चिमी घाट दो विशाल जंघाएँ हैं। कन्याकुमारी इसके चरण हैं। सागर इसके पग पखारता है। पावस के काले-काले मेघ इसके कुंतल केश हैं, चाँद और सूरज इसकी आरती उतारते हैं। यह वंदन की भूमि है। अर्पण की भूमि है। इसका कंकर-कंकर शंकर है। इसका बिंदु-बिंदु गंगाजल है। हम जिएंगे तो इसके लिए, मरेंगे तो इसके लिए"।

वास्तव में अटल जी भारत के लिए ही जी रहे थे। उनका एक-एक क्षण राष्ट्र सेवा में बीता रहा है। वे भारत की जनता को अपना आराध्य मानते हैं। अटल जी की सदैव यही कामना रहती है कि हमारे राष्ट्र

का मस्तक ऊँचा रहे। वे कहते हैं- "आज किसी का अभिनंदन होना चाहिए तो सेना के उन जवानों का अभिनंदन होना चाहिए जिन्होंने अपने रक्त से विजय की गाथा लिखी है। हमारी सेना ने हमारे इतिहास को बदला है और भूगोल को भी परिवर्तित किया है। एक ही प्रहार में इतिहास बदल गया और भूगोल डोल गया। स्वभाविक रूप से हम उन शहीदों के प्रति हमारी विजय का सर्वाधिक श्रेय अगर किसी को दिया जा सकता है तो हमारे बहादुर जवानों को और उनके कुशल सेनापतियों को।

अटल जी भारतीयता के स्वर को जिस ओजस्विता और तेजस्विता के साथ अपनी कविताओं में करते हैं। उसी तेवर के साथ वे अपने गद्य में भी प्रकट करते हैं। वे 'अपनेपन' को खोना नहीं चाहते। वे नहीं चाहते कि हम आधुनिकता के मोह में पड़कर अपने निजत्व को गवां बैठे। हमारा अपनापन ही तो हमारी पहचान है। हमारी ख्याति है। हमारी धरोहर है, वे नहीं चाहते कि दुनिया की चकाचौंध के मोह में फंसकर हम अपनी धरोहर को खो दे। वास्तव में धरोहर के बिना कोई भी राष्ट्र कंगाल माना जाता है। अटल जी राष्ट्र को कंगाली के गर्त में धकेलने वालों को सावधान करते हुए लिखते हैं- "भारतीयकरण आधुनिककरण का विरोधी नहीं है। न भारतीयकरण एक बँधी- बँधाई परिकल्पना है। हमें भारत को आधुनिक राष्ट्र का रूप देना है किंतु आधुनिकता की होड़ में हम अपनेपन को भुला न दे, इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है।"

भारतीयकरण हमारे जीवन और जागरण का प्रमाण है। यह हमारी गतिशीलता और विकास का द्योतक है। यह इस संकल्प का उदघोषक है की हम अपने उज्ज्वल अतीत से प्रेरणा लेकर उज्ज्वलतर भविष्य का निर्माण करने के लिए सतत संघर्षशील है।



गीत नया गाता हूँ

दूटे हुए तारों से फूटे वासन्ती स्वर,
पत्थर की छाती में उग आया नव अंकुर,
झरे सब पीले पाद,
कोयल की कुहुक रात,
प्राची में अरुणिमा की रेख देख पाता हूँ।
गीत नया गाता हूँ।

दूटे हुए सपने की सुने कौन सिसकी ?
अन्तर को चीर व्यथा पलकों पर ठिठकी।
हार नहीं मानूँगा,
रार नई ठानूँगा,
काल के कपाल पर लिखता-मिटता हूँ।
गीत नया गाता हूँ।

- श्री अटल बिहारी वाजपेयी



लिज़ा मिश्रा, +3 तृतीय वर्ष



प्रायः प्रत्येक व्यक्ति की एक खासियत होती है कि उसे आसानी से कोई चीज़ पसंद नहीं आती जब तक कि वो उसे अच्छे से देखते नहीं या परखते नहीं। और जब वो चीज़ एक बार पसंद आ जाती तो वो उसे आसानी से छोड़ते नहीं। लेकिन माँ का प्यार और प्रेमिका के प्रेम की बात ही कुछ और होती है। आए दिन हमारे आस पास इसके प्रमाण मिल ही जाते हैं, और मेरी कहानी का आधार भी यही है।

रवि 27 साल का युवक है। घर में माँ और बहन के अलावा और कोई नहीं रहता। पिता मृत्यु से पूर्व कुछ पैसों का इंतजाम कर गए थे ताकि भविष्य में उनके परिवार को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। इसीलिए उनके बाद रहन सहन में कभी कोई तकलीफ नहीं हुई। पिता के निधन के बाद रवि ने उनकी जगह नौकरी कर ली। नौकरी करने के बाद उसने सबसे पहली जिम्मेदारी अपनी बहन का शादी का निभाया। बहन की शादी तो हो चुकी है, अब माँ की जिद है कि रवि भी अपनी गृहस्थी बसाए।

माँ बाप के संस्कार में बड़े हुए रवि को किसी भी प्रकार की कोई बुरी आदत नहीं थी, मगर वो पढ़ाई में थोड़ा कमजोर था। पर हर काम में माहिर, थोड़ा लज्जाशील स्वभाव का भी था। उसके इन्हीं सब गुणों के कारण सभी लोग उसे पसंद करते थे और आशी भी। आशी ने खुद से आकर रवि से प्रेम निवेद किया था। आशी रवि के बहन की सहेली है, और आशी के बारे में बहुत कुछ सुना भी था उसके मुँह से। इसीलिए रवि को उसे अपनाने में भी कोई दिक्कत नहीं हुई।

रवि को आशी के बारे में अपनी माँ को बताने में ज्यादा समय नहीं लगा क्योंकि माँ आशी को जानती थी और रवि भी उसे अपनी जीवन साथी के रूप में अपनाना चाहता था। रवि की खुशी के लिये माँ ने इस रिश्ते को तो अपना लिया था मगर आशी को अपना नहीं पाई थी। इस

का एक कारण यह था कि वो अपने इकलौते बेटे की शादी अपनी पसंद की लड़की से करना चाहती थी। भले ही आशी से वो दो तीन बार मिली हो पर वो यह जानती थी कि आशी में वो कोई गुण नहीं है जो उसकी प्रसन्नता का कारण बने, और उसे अपने बेटे के लिए उसके अनुरूप एक सीधी सादी लड़की चाहिए थी पर आशी अपनी सोच रखने वाली एक आधुनिक नारी है। रवि को उसका खुद से आकर प्रेम निवेदन करना माँ को हजम नहीं हो रही था। अतः वो हमेशा भगवान से यही प्रार्थना किया करती थी कि रवि उस लड़की से दूर हो जाए और रवि की शादी वो अपने पसंद की लड़की से करवा सके ।

अब भगवान माँ की ये प्रार्थना भगवान सुनते या फिर आशी की इस मनोकामना को पूरा करते कि रवि उसके लिए अपनी माँ को छोड़ दें, क्योंकि आशी भी यह बात जानती थी कि रवि की माँ उसे पसंद नहीं करती। विवाह के पश्चात भी वे शायद ही एक दूसरे को अपना सकें। आशी की इसी आशंका को उसकी माँ यह कहकर और भी गहरा कर देती है कि -

" रवि की माँ तुझे पसंद नहीं करती तो तू क्यों उन लोगों के पास जाने को उतावली हुई जा रही है। वो तुझे अभी पसंद नहीं करती और हो सकता है शादी के बाद कोई न कोई कमी निकाल कर तुझे रवि से दूर करवा दें। तब तू क्या करेगी? और देख लेना मेरी बात एक दिन सच हो कर ही रहेगी। अभी भी वक्त है तू अपने लिए अलग बंदोबस्त करने की तैयारी कर ले।"

आशी की माँ रवि को पसंद करती थी और चाहती थी उसकी बेटी उसके साथ हमेशा खुश रहे। वो उनके संसार को खुश देखना चाहती थी, लेकिन उसके अनुसार रवि की माँ यह कभी होने नहीं देगी। इसीलिए वो चाहती थी कि विवाह के बाद रवि की माँ अपने बेटे के संसार से दूर, गांव चली जाए।

गुलाब एक सुंदर फूल है पर उसके साथ जुड़ा कांटा कष्ट देता है। गुलाब को सब अपनाना चाहते हैं, पर उसके साथ उसके साथ जुड़े कांटे को कोई नहीं अपनाना चाहता। सब केवल उस फूल के सौंदर्य में ही रम जाना चाहते हैं। इसलिए एक फूल व्यवसायी भी जब फूल बेचता है तो उसके कांटों को उससे अलग करके ही बेचता है। ताकि उन कांटों की वजह से न तो उसके ग्राहक को और न ही उसके व्यापार को कोई नुकसान पहुँचे। पर मनुष्य का जीवन इतना आसान कहाँ! अगर वो फूल की कामना करता है तो उसे उसके साथ कांटों को भी झेलना पड़ेगा ही पड़ेगा।

रवि ने आशी को समझने का भरपूर प्रयास किया कि वो माँ को अकेली नहीं जाने दे सकता। पर आशी को भी छोड़ना उसके लिए कहाँ आसान था? अपने पहले प्यार को वो कैसे जाने दे सकता था ? एक तरफ हवा एक तरफ पानी। दोनों में से एक के बिना भी क्या जीवन जिया जा सकता है? हर बार जब भी आशी का फोन आता है वो एक ही सवाल को बार बार पूछती "कोई फैसला लिया या नहीं?"

उसे फैसला लेना था, पर वो कैसे करता कोई फैसला! एक ओर जन्म देने वाली माँ, जो उसके लिए सर्वस्व है और दूसरी ओर पूरा जीवन साथ देने वाली प्रेमिका है। रात दिन इसी सोच में उसका जीवन बीतता रहा, न कुछ कर पाता है और न किसी से कुछ कह ही पाता है। यही सब सोचते सोचते एक दिन उसकी सारी समस्या का अंत आखिर हो ही गया। न वो अपनी माँ का हो सका और न ही अपने प्यार का। वो चिर निद्रा में सो गया जब वह इसी उधेड़बुन में खोया हुआ गाड़ी चलाते हुये ऑफिस जा रहा था और उसी वक्त पीछे से आती गाड़ी ने उसे धक्का दे दिया। उस धक्के से वो जमीन पर इस तरह गिरा कि उसके सर से खून की धार बहने लगी और वो फिर कभी न उठा।

पता नहीं आखिर भगवान ने किसकी प्रार्थना सुनी, माँ की या फिर आशी की? जो भी हो जीवन के इस दौराहे से भगवान ने उसे मुक्ति जरूर दिला दी।

सोचती हूँ तुम होते तो क्या होता ?

सोचती हूँ तुम होते तो क्या होता ?
जिंदगी यूहीं चलती रहती,
पर जीने की वजह न होती।
राह तो होती,
पर मंजिल का पता न होता।
पर अच्छा हुआ जो खो गए तुम
उस महफिल में,, वरना
तुम्हें खोना शायद

किस्मत को भी मंजूर ना होता।
सोचती हूँ तुम होते तो क्या होता ??
कभी एक ख्वाब था मेरा,
तुम्हें पाने का,
हाथ पकड़ कर जिंदगी भर साथ निभाने का,
पर तुम न पहचान पाए मेरे प्यार को,
वादा जान देने का था,
पर काश दिल ही दिया होता।



पिंकी सिंह, +3 तृतीय वर्ष



खेल जो कहीं खो गए...

बचपन के वे खेल जो हमें खूब भाते थे। ऐसा लगता था कि जैसे उन खेलों के लिए छुट्टियां आती थीं। लेकिन अब वो खेल कहां हैं? आजके बच्चों को तो उन खेलों का नाम भी नहीं पता होगा। दोस्तों के साथ अक्कड़-बक्कड़ बम्बे बोल, छुपन-छुपाई, कबड्डी-कबड्डी, चोर-सिपाही, लब्बा डंगरिया, गिल्ली-डंडा, आँखमिचौली, लुडो, राजा रानी और चोर पुलिस, कित-कित, फुगड़ी, पुच्ची, झूला, लंगड़ी, गुड्डे गुड़ियों की शादी जैसे तमाम खेल मौका मिलते ही खेलना शुरू कर देते थे। कई बार इन खेलों के ज़रिये हम अपने शोक और सपनों को भी जी लेते थे, लेकिन अब यही खेल गुजरे जमाने के लगने लगे हैं। ये खेल सिर्फ खेल नहीं हुआ करते थे, बल्कि जीवन के कई पाठ अनजाने सिखा देते थे, जिनकी कमी आजकल की पीढ़ी में हमें खलती है। चलिए एक बार फिर इन खेलों को नाम और तस्वीरों में ही सही, फिर इन्हें याद कर अपनी पुरानी यादें ताजा करते हैं।

समय के साथ हमारे बचपन के मायने भी बदल गये हैं। पहले दिन-दिन भर होने वाली धमाचौकड़ी, बच्चों का शोर शराबा करता झुंड और अल्हड़पन सब घर के आँगन तक सीमित हो गया है। वो खेल जिन्हें खेलकर तमाम पीढ़िया बड़ी हुई हैं, अब वो खेल हमें तस्वीरों में नजर नजर आते हैं। अब गांव की चौपालों में बच्चों का न तो वो शोर सुनाई देता और न ही शहरों के पार्कों में बच्चे खेलते नजर आते हैं। अब इन खेलों को हम फेसबुक में पढ़कर या तस्वीरों में देखकर मुस्करा लेते हैं।

ये सच है कि वक्त के साथ दुनिया बदलती है, विकास होता है, हमारी सोच और आदतें बदलती हैं, प्राथमिकताएं बदलती हैं...लेकिन इन बदली हुई प्राथमिकताओं में कई बार हम वो

चीज़ें पीछे छूट जाती हैं, जो कभी हमारी ज़िंदगी का महत्वपूर्ण हिस्सा हुआ करती थीं... जैसे वो खेल जिनके साथ हम बड़े हुए हैं। पुराने समय के खिलौने की जगह अब मोबाइल, वीडियो गेम, कम्प्यूटर ने ले ली है। जो कुछ कमी बची थी उसे किताबों से भरे बैग ने पूरी कर दी है। देखकर तो लगता कि पुराने खेल कहीं इतिहास के पन्नों में न दर्ज हो जाएं और हमारी आने वाली पीढ़ी इसे सिर्फ कागजों में खोजती रह जाए।



सोनाली राउत, +3 तृतीय वर्ष



सुबह

गर्म गर्म लड्डू सा सूरज
लिपटा बैठा लाली में
सुबह सुबह रख आया कौन
इसे आसमान की थाली में

मूंदी आंखें खोली कलियों ने
चिड़ियों ने गाया गाना
गुन गुन करते भंवरों ने
खिलते फूलों को पहचाना

तभी आ गई फुदक फुदक कर
एक तितलियों की टोली
मधुमक्खियों ने रस लेकर
भर डाली अपनी झोली

उठो उठो हम लगे काम पर
तब आगे बढ़ पाएंगे
वे क्या पाएंगे जीवन में
जो सोते रहे जाएंगे।

हाफिजा बेगम, +3 द्वितीय वर्ष



गर्मी के दिन

गर्मी के दिन आते हैं
हमको बहुत सताते हैं।

कहां घूमने जायें हम ?
तेज धूप में निकले दम।

चलने का रास्ता गरम
लू को आती नहीं शर्म।

कहीं चैन न पाते हैं,
मन ही मन सोचते रह जाते

कब खत्म हो यह गर्मी के दिन
जिससे राहत पाए हम ।

शरिफा शरवारी, +3 द्वितीय वर्ष





मैत्रेयी पुष्पा

- हिंदी अकादमी द्वारा साहित्य कृति सम्मान
- कहानी 'फैसला' पर कथा पुरस्कार मिला
- 'बेतवा बहती रही' उपन्यास पर उ.प्र. हिंदी संस्थान द्वारा प्रेमचंद सम्मान
- 'इदन्नमम' उपन्यास पर शाश्वती संस्था बंगलौर द्वारा नंजनागुडु तिरुमालंबा पुरस्कार
- म.प्र. साहित्य परिषद द्वारा वीरसिंह देव सम्मान
- वनमाली सम्मान 2011

नब्बे के दशक में जिन रचनाकारों ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई मैत्रेयी पुष्पा का नाम उनमें प्रमुख है। उन्होंने हिन्दी कथा-धारा को वापस गाँव की ओर मोड़ा और कई अविस्मरणीय चरित्र हमें दिए। 'इदन्नमम' की मंदा, 'चाक' की सारंग, 'अल्मा कबूतरी' की अल्मा और 'झूला नट' की शीलो, ऐसे अनेक चरित्र हैं जिन्हें मैत्रेयी जी ने अपनी समर्थ दृश्यात्मक भाषा और गहरे जूड़ाव के साथ आकार दिया है। मैत्रेयी पुष्पा का जन्म 30 नवम्बर, 1944 को उत्तर प्रदेश राज्य के अलीगढ़ ज़िले में सिकूरा नामक गाँव में हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा झाँसी ज़िले के खिल्ली गाँव में हुई। उन्होंने अपनी एम.ए. (हिंदी साहित्य) की डिग्री बूंदेलखंड कॉलेज, झाँसी से प्राप्त की थी। उन्हें राष्ट्रीय सहारा, वनिता जैसी पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर सक्रिय लेखन का अनुभव प्राप्त है। उन्हें हिन्दी अकादमी, दिल्ली की उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। उनके लेखन में ब्रज और बूंदेल दोनों संस्कृतियों की झलक दिखाई देती है। मैत्रेयी पुष्पा को रांगेय राघव और फणीश्वर नाथ 'रेणु' की श्रेणी की रचनाकार माना जाता है।

उपन्यास

- चाक (२००४)
- अल्मा कबूतरी
- कहै ईसुरी फाग
- बेतवा बहती रही
- चिन्हार
- इदन्नमम
- गुनाह बेगुनाह

आत्मकथा

- कस्तूरी कुण्डल बसै

- गुड़िया भीतर गुड़िया

कहानी संग्रह

- चिन्हार
- ललमनियाँ तथा अन्य कहानियां
- त्रिया हठ
- फैसला
- सिस्टर
- सेंध
- अब फूल नहीं खिलते
- बोझ

- पगला गई है भागवती

- छाँह
- तुम किसकी हो बिन्नी?

कविता संग्रह

- लकीरें

यात्रा संस्मरण

- अगनपाखी

लेख संग्रह

- खुली खिड़कियां



मैं कुत्ता ही भला

लोग मुझे कहते हैं कुत्ता, और इस समाज में कुत्ते के नाम की गाली भी दी जाती है। अगर है ये गाली तो मैं अपने आपको नहीं मेरे इंसान वाले बड़े भाई बहनों को कुत्ता कहूंगा, वैसे आप सबको अपना परिचय तो दे दूँ, मेरा नाम वीर भद्र सिंह। प्यार से मेरी माँ मुझे वीरू GC कहती हैं। वैसे मैं एक डॉल्मेशियन प्रजाति का कुत्ता हूँ। दिखने में बहुत ही प्यारा, एक बात कहूँ मेरी माँ ना मुझे उनके हर इंसान बच्चों से ज्यादा प्यार करती है, और मैं भी उन्हें बहुत प्यार करता हूँ। क्यूं ना करूँ? वो ही तो मेरी सब कुछ है। मुझे क्या अच्छा लगता है क्या बुरा, मेरी आंखों को देख कर ही भांप लेती है। मुझे खाने में क्या पसन्द है और किस चीज़ को मैं सूंघता तक नहीं, इसको जानने में तो मेरी माँ ने डिप्लोमा की है। वो मेरी सुबह है मेरी शाम है। मुझ जैसे बंजारा गली के कुत्ते का वही एक भगवान हैं, मेरे पापा भी हैं, वो थोड़े कड़क स्वभाव के हैं, और मेरी उनसे कभी नहीं बनती। मैं तो अपने माँ का ही लाइला बनके रहना चाहता हूँ, और आजतक भी अपने माँ के पल्लू को ही मुंह में दबाए चलता हूँ। मेरे वैसे कोई दोस्त नहीं है, पर जब माँ को अपने काम से छुटकारा मिल जाए तो उनके साथ ही थोड़ा खेल लेता हूँ। हम दोनों में एक अनकही सा रिश्ता जैसे बना हुआ है, यहीं कुछ 70/30 का। जैसे वो अगर सब्जी काटे तो सत्तर भाग रसोई के लिए ओर तीस भाग मेरे लिये, अगर वो खाना खाएँ तो सत्तर भाग उनका ओर तीस मेरा। लेकिन मैं रोटियों पर कभी कोम्प्रोमाईज़ नहीं करता। उसमें पचास- साठ भाग तो मैं ही खा जाता हूँ और मेरी माँ मुझे खाने देती है, कुछ नहीं कहती, क्योंकि उन्हें पता है रोटियों के बिना वीरू, वीरू बेटा कैसे बनेगा?

वैसे तो साल में 11 महीने मौज मनाते हैं हम माँ बेटे..... सुबह 5 बजे मेरी माँ ब्रेडमिल्क देकर मुझे जगाती है फिर घूमने बाहर छोड़ देती है। जब मैं घूम फिर कर वापस आ जाता हूँ तो वो मेरे साथ खेलते हुए घर के काम काज में लग जाती है। मेरे लिए सुबह का नाश्ता बनाती है। फिर दोपहर में मिलकर हम लंच करते हैं। शाम को कुछ देर मेरे साथ खेलती है और घुमाने भी ले जाती है। यूँ खाते, खेलते प्यार करते कैसे रात हो जाता है पता ही नहीं चलता। लेकिन गर्मियों का मौसम मुझे बिल्कुल भी पसन्द नहीं है। आजकल कुछ चिड़चिड़ा सा रहने लगा हूँ। थोड़ा नाराज़ भी रहता हूँ। पर किसीसे कुछ कह नहीं पाता, ये वही महीना है जब मेरे इंसान वाले भाई बहन मुझसे मेरा हक छीन लेते हैं। हम माँ बेटे को जैसे अलग कर देते हैं। जाने क्यूँ उन्हें गर्मियों की छुट्टी मिलती है और वो मेरे माँ के पास अपना हक जताने चले आते हैं। सालभर न जाने कहाँ रहते हैं ये? कभी हमारे बारे में सोचते तक नहीं। खैर मुझे फरक नहीं पड़ता, पर मेरी माँ को पड़ता है। वो उनको मिलने के लिए इस मौसम का हमेशा इंतजार करती रहती है। "ये इंसानो की तो बात ही कुछ अलग है, प्यार भी करते हैं और एक दुसरे से दूर भी रह लेते हैं पर मैं तो कुता हूँ, मैं अपने माँ के बिना एक पल भी नहीं रह सकता। इनके आने से मुझे बहुत कम्प्रोमाइज करना पड़ता है। घर छोटा है इसलिए मैं अपनी माँ के पास सो नहीं पाता। ये एक महीना बरामदे में मेरे लिए बिस्तर डाला जाता है। यहां तक कि खाना भी सब साहबजादे खाने के बाद ही नसीब होता है। आजकल मेरी माँ, मेरे साथ खेलती तक नहीं। ना मुझे उतना प्यार कर पाती है। और करे तो भी कैसे? ये भाई बहन उन्हें फुरसत ही कहाँ देते हैं। इसी बात का गुस्सा था मुझे, इसीलिये आज मैंने अपने भाई को काट लिया। माँ ने बहुत मारा और डाँटा भी। सब मेरे ऊपर बहुत ही गुस्सा हैं। लेकिन मैं बहुत खुश हूँ, ये बदला ही तो था जो मैंने इन इंसान भाई बहनों से ले लिया। इनसे गुस्सा सिर्फ इस बात का है, कि अगर तुम माँ बाप से प्यार करते हो, तो छोड़ कर जाते ही क्यूँ हो? उनके पास तो रहकर भी पढ़ाई और नौकरी की जा सकती है ना? पर नहीं तुम्हें जाना ही है, और तुम्हारे माँ बाप तुम्हारे हिस्से का प्यार जब मुझ जैसे कुत्ते को देते हैं तो फिर तुम्हें मेरा हक छीनने वापस आना ही है। अरे तुम्हें तो हम जैसे कुत्तों से सीखना चाहिए, कि प्यार कैसे किया जाता है। मैं तो अपनी माँ को मरते दम तक नहीं छोड़ सकता।



सोनिया नायक, +3 तृतीय वर्ष



श्रवण सहाय अवार्ड, जनकवि मेहरसिंह सम्मान (हरियाणा साहित्य अकादमी), अंतरराष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान (कथा - यूके, लंदन), शब्द साधक ज्यूरी सम्मान (उपन्यास 'रेत' के लिए), कथाक्रम सम्मान, साहित्यकार सम्मान (हिंदी अकादमी, दिल्ली सरकार), साहित्यिक कृति सम्मान (हिंदी अकादमी), राजाजी सम्मान (मद्रास), डा. अंबेडकर सम्मान (भारतीय दलित साहित्य अकादमी), प्रभादत मेमोरियल अवार्ड, शोभना अवार्ड

भगवानदास मोरवाल

भगवानदास मोरवाल (जन्म २३ जनवरी १९६०) नगीना, मेवात में जन्मे भारत के सुप्रसिद्ध कहानी व उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय से एम.ए. की डिग्री हासिल की। उन्हें पत्रकारिता में डिप्लोमा भी हासिल है। मोरवाल के अन्य प्रकाशित उपन्यास हैं काला पहाड़ (१९९९) एवं बाबल तेरा देस में (२००४)। इसके अलावा उनके चार कहानी संग्रह, एक कविता संग्रह और कई संपादित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। दिल्ली हिन्दी अकादमी के सम्मानों के अतिरिक्त मोरवाल को बहुत से अन्य सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। उनके लेखन में मेवात क्षेत्र की ग्रामीण समस्याएं उभर कर सामने आती हैं। उनके पात्र हिन्दू-मुस्लिम सभ्यता के गंगा जमुनी किरदार होते हैं। कंजरो की जीवन शैली पर आधारित उपन्यास रेत को लेकर उन्हें मेवात में कड़े विरोध का सामना करना पड़ा, किंतु इसके लिए उन्हें २००९ में यू के कथा सम्मान द्वारा सम्मानित भी किया गया है।

उपन्यास : काला पहाड़, बाबल तेरा देस में, रेत, नरक मसीहा, हलाला, सुर बंजारन

कहानी संग्रह : सिला हुआ आदमी, सूर्यास्त से पहले, अस्सी मॉडल उर्फ सूबेदार, 'सीढ़ियाँ, माँ और उसका देवता', लक्ष्मण-रेखा, दस प्रतिनिधि कहानियाँ

संस्मरण : पकी जेठ का गुलमोहर (बेनाम और गुमनाम पात्रों की अनकही कथा)

कविता संग्रह : दोपहरी चुप है

संपादन : बच्चों के लिए कलयुगी पंचायत, एवं अन्य दो पुस्तकों का संपादन



आपकी बात

नमस्ते,

मैं आभारी हूँ कि मुझे फिर मौका मिला 'आपकी बात' में अपनी भावनाओं को प्रकट करने के लिए। जिस घर में शांति हो, जहाँ का वातावरण निर्मल हो, हम सब चाहते हैं कि ऐसे ही स्थान में सदैव रहें। ऐसी ही एक जगह है 'शान्ति निकेतन'। जिसके चारों तरफ सिर्फ शांति ही शांति है। यह मेरा निजी अनुभव है। वहाँ पे प्रकृति के साथ बैठकर पेड़ के नीचे पढ़ना मुझे बहुत अच्छा लगा। वहाँ पे हिन्दी प्रेमियों से मिलकर खुशी इस बात की हुई कि आज हिन्दी का प्रचार प्रसार तीव्र गति से हो रहा है। इतना ही नहीं वहाँ बहुत कुछ सीखने को भी मिला। जैसे हिन्दी के साथ काम करना, और कड़ी मेहनत से हिन्दी का प्रचार प्रसार करना आदि। और इस सबके लिए वेदुला मैडम, मानोरमा मैडम और उसमान सर् को धन्यवाद देती हूँ कि 'शांति निकेतन' जैसी सुन्दर ,शांत, और प्रकृति से जुड़े एक स्थान से हमको परिचित कराया।

लिज़ा मिश्र, +3 तृतीय वर्ष

हर महीने की तरह इस बार भी ई-पत्रिका बहुत अच्छी बनी है। हमारी पत्रिका में इस बार शांतिनिकेतन के बारे में पूरी जानकारी दी गयी है। सबने अपने अपने अनुभवों को इस पत्रिका के माध्यम से व्यक्त किया है। पिंगी दीदी ने शांतिनिकेतन के जन्म, उद्देश्य, विश्व भारती की स्थापना, विशेषतायें आदि सबके बारे में महत्वपूर्ण जानकरियाँ दी हैं। हफ़िज़ा ने शांतिनिकेतन के भित्तिचित्र के बारे में लिखा है। इन लेखों को पढ़ कर बहुत ही अच्छा लगा। शांतिनिकेतन जाकर हमें बेहद खुशी हुई। बहुत मजे भी किये और सारी यादें हमारी इस पत्रिका में मौजूद है। हम जब भी चाहें फिर पढ़ पाएंगे और साथ में तस्वीरें भी देख पाएंगे।

स्तुति प्रज्ञा, +3 द्वितीय वर्ष

नमस्कार, इस बार की ई पत्रिका का मुख पृष्ठ बहुत ही अच्छा है। मुझे पढ़ कर बहुत अच्छा लगा। प्रजा का सोनझूरी हाट, सुहाना की यादें, पिंकी दीदी के संस्मरण, और पुलवामा के वीर यह सब बहुत ही अच्छे थे और मुझे पढ़ कर बहुत अच्छा लगा। शान्ति निकेतन का जन्म आदि सब पढ़ कर बहुत अच्छा लगा। धन्यवाद माम् यह ई पत्रिका निकालने के लिए जिसकी वजह से मुझे इतने अच्छे अच्छे लेख पढ़ने को मिल रहे हैं। धन्यवाद

हाफीजा बेगम, +3 द्वितीय वर्ष

इस बार "हिंदी भारती" शांतिनिकेतन विशेषांक को पढ़ने के बाद मेरे यादों के कमरे की खिड़की फिर से खुली, और शांतिनिकेतन के ऊपर सबके लेखों को पढ़ते समय वहाँ की स्मृतियाँ मुझे फिर से वहाँ ले गईं। "हिंदी भारती" में हमारे अध्ययन यात्रा पर विशेषांक को पढ़ कर बहुत अच्छा लगा। आशा करती हूँ कि इस वर्ष की तरह हर वर्ष "शांतिनिकेतन" की तरह साल में एक बार "हिंदी भारती" में हमारे विभाग के अध्ययन यात्रा पर एक विशेषांक के रूप में निकलती रहे।

शुभश्री शताब्दी दास, +3 द्वितीय वर्ष

शांतिनिकेतन के विषय में पढ़कर मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। शांतिनिकेतन के जन्म के पीछे रवीन्द्र नाथ टैगोर जी के उद्देश्य को पढ़ कर बहुत अच्छा लगा। विश्व भारती की स्थापना के पीछे उनके उद्देश्य को पढ़ कर अच्छा लगा। उनका उद्देश्य यह था कि वह एक ऐसे शिक्षा केन्द्र की स्थापना करें जहाँ पर समस्त जाति के मनुष्य पढ़ सकें और वह अपनी संस्कृति के अलावा अन्य संस्कृति के विषय में पढ़कर सकें। सारे मनुष्य एक साथ मिलकर कर समाज में रह सकें। ताकि इनके बीच कभी भेदभाव ना हो। सब हमेशा एक दूसरे की संस्कृति को अपना सकें और हमेशा मिलकर रहे। दोल यात्रा के विषय में भी पढ़कर अच्छा लगा। और सारे लेख भी बहुत अच्छे हैं।

धन्यवाद माम् आप हर महीने ई-पत्रिका प्रकाशित करती हैं। जिसे हम सब हर महीने पढ़ते हैं और पढ़ कर बहुत कुछ सीखते हैं। शांतिनिकेतन के विषय में पढ़कर भी बहुत अच्छा लगा।

शरीफा शरवारी, +3 द्वितीय वर्ष

कवि अटल बिहारी वाजपेयी

<https://youtu.be/okjBTA7NLS0>

<https://youtu.be/D6gWVmn0bBQ>



यादों के गलियारों से

कभी अलविदा ना कहना

विभाग से विदा लेती +3 तृतीय वर्ष की छात्रायें



धन्यवाद

